कमल से, बातों-बातों में ही उसे पता चलता है कि उस दिन के खाने के अपने हिस्से के तीन आने वह वरुण को दे चुका है। तभी वह देवल से उसके पैसों के बारे में भी पूछता है। वरुण एक-दो बार उधारी के पैसे भूल जाने का नाटक भी करता है। फिर एक दिन देवल के उसकी ओर जाने पर, कमल से पता चलता है कि वरुण अचानक कलकत्ता चला गया है। लंबे समय तक उसके लौटने की संभावना नहीं है। हो सकता है, न ही लौटे। संभव है इधर से निराश होकर वह नौकरी की तलाश में ही उधर गया हो। कहानी में 'साहित्याचार्य शरदचन्द्र' जैसी पुस्तक और 'शरद ग्रंथावली' का उल्लेख भी वस्तुतः एक दौर का इतिहास छिपाए हैं- त्रिलोचन की युवावस्था का दौर 'साहित्याचार्य शरदचन्द्र' भले ही कोई वास्तविक पुस्तक न हो, लेकिन एक दौर में हिन्दी की युवा पीढ़ी पर शरद के संक्रमण प्रभाव का संकेत तो इससे मिलताही है।

त्रिलोचन की किताबों पर ब्लर्ब के रुप में, उनका जो जीवन परिचय छपता था उसमें प्रायः यह सूचना भी होती थी कि उन्होंने अंग्रेजी में एम.ए. प्रीवियस किया था. आगे चलकर इस अधूरे एम.ए. ने ही उनके लिए अध्यापकी की नौकरी का द्वार भी खोला। 'देश-काल' वस्तुतः उनके इस दौर की स्मृतियों के संरक्षण का एक रचनात्मक उद्यम है। कहानी में 'बासुदेउ' नामक एक पात्र भी है जो गांव में अकेली बूढ़ी मां के साथ रहता है। लम्बे समय तक वह गांव से बाहर घूमता-भटकता है। अब लौटा है और फिलहाल कुछ दिन गांव में ही उसका रहने का विचार है। त्रिलोचन का प्रसिद्ध काव्य-नायक नगई महरा संभवतः पहली बार इसी कहानी में प्रकट होता है। अंग्रेजी एम.ए. (प्रीवियस) में त्रिलोचन ने कविता को पढ़ा होगा। उसके 'प्रोलॉग टू कैंटरबरी टेल्स' की पूरी दुनिया, पात्र निरुपण उसकी विशिष्ट शैली 'देश-काल' में बहुत स्पष्ट है। मानवीय व्यवहार में निहित प्रदर्शन और पाखंड, व्यंग्य की गहरी अंतर्धारा के साथ, 'देशकाल' के पात्रों में सब कहीं लक्षित की जा सकती है। ताली का नाम रामकरन सिंह है। मिडिल तक पढ़े हैं। अवधी ही बोलते हैं। कभी-कभी हिन्दी भी बोल लेते हैं-तभी जो कोई अमीन हल्केदार या पढ़ा-लिखा आदमी आ जाता है। गांव वाले हिन्दी बोलने वाले को पसंद नहीं करते- देसी कुत्ती, मरहठी बोल। दुल्लीलाल पटवारी हैं- गांधी टोपी, कुर्ता-धोती और देशी जूते। गांव में कहीं आते-जाते नहीं। अपने मतलब से लोग उन्हीं का दरवाजा घेरे रहते हैं। नई उमर है और अंग्रेजी मिडिल तक की पढ़ाई की है। पुराने पटवारी हिन्दी-उर्दू जानने वाले थे। ये थोड़ा तीनों जानते हैं। इसलिए उनका और भी आदर है। चॉसर के वकील की तरह- 'ही लुकेथ विजियर दैन वॉट ही इज़।'

नगई महरा द्वारा रामायन का पक्ष लेने पर, पटवारी, दुल्लीलाल उसे खारिज कर चुके हैं। सिउपाल चमार है। वह भी कबीर का पक्ष लेकर रामायन को नकारता है। उसका तर्क है, 'काउ व रमायन मं? ओ से अच्छात कबीर साहेब कहिग बाटेन...(वही, पृ. 89)'

जब दुल्लीलाल बासुदेउ सिंह से उसकी राय पूछते हैं, उसका उत्तर है, 'मेरी बात तो सिउपाल भगत कह चुके हैं।' (वही,पृ. 90)

त्रिलोचन की अनेक कहानियां सामाजिक कुरीतियों और व्याप्त अंधविश्वासों को केन्द्र बनाकर लिखी गई हैं। 'अंतर्दाह' में वर्णसंकर संतान की पीड़ा का अंकन है। 'उपलब्धि' में एक विधवा और बेसहारा स्त्री के शोषण के विभिन्न रूप सामने आते हैं। उसके शोषण के लिए दो परस्पर विरोधी व्यक्ति भी एक हो जाते हैं। जमीन की देखभाल, रोपनी-बोआई-कटाई के नाम पर रामनाथ सिंह, पंडाइन की जमीन हथियाता है और सिवहरख सुकुल उसका संबंधी बनकर उसकी बेटी का ही सौदा करने को तैयार है। इस सामाजिक संरचना में स्त्री सबसे कमजोर है। अनेक स्तरों पर उसका शोषण ही पुरुष की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

संरचना की दृष्टि से त्रिलोचन के यहां वैसी कहानियां भी पर्याप्त संख्या में हैं जो आकार की दृष्टि से बहुत छोटी होती हैं। जब ये कहानियां लिखी गईं, हिन्दी में लघु-कहानी की कोई अवधारणा नहीं थी। जिस सामाजिक विडम्बना और चोट को आधार बनाकर बाद में लघु कहानी का विकास हुआ, वह कचोट और तराश त्रिलोचन की इन कहानियों में प्रायः नहीं है। देश के बंटवारे की पृष्ठभूमि पर मंटो ने 'स्याह हाशिए' जैसी लघु कहानियां लिखीं, त्रिलोचन के यहां वैसी सामाजिक और कलात्मक सजगता प्रायः ही अनुपस्थित है। जीवन के छोटे-छोटे घटना-प्रसंग सामन्ती मूल्यों की आलोचना और इसी तरह के विचारों को आधार बनाकर त्रिलोचन अपनी कहानियां बुनते हैं। ये कहानियां किसी भी स्तर पर अपने समय की राजनीति में कोई प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं करतीं। लेकिन 'व्यवस्था की चिंता' जैसी कहानी उनके यहां अवश्य है। इसमें रामगढ़ कांग्रेस में एक निर्धन कार्यकर्ता को इसलिए प्रवेश नहीं मिलता क्योंकि उसके पास प्रवेश के लिए अधिकृत टिकट नहीं है। भूखा रहकर, दो दिन पैदल चलर वह किसी दूरदराज क्षेत्र से कांग्रेस में शामिल होने आया है। ड्यूटी पर तैनात स्वयंसेवक कर्तव्य और व्यवस्था के नाम पर उसे अंदर नहीं जाने देता। हाथापाई और धक्का-मुक्की में वह व्यक्ति जमीन पर गिर जाता है और भीड़ का रेला उसके ऊपर से निकल जाता है। त्रिलोचन सवाल उठाते हैं- व्यवस्था और अनुशासन के नाम पर कुछ 'बड़े' दिमाग उसके पीछे होंगे, उस बेचारे स्वयंसेवक की क्या बिसात और कुसूर। इस तरह वे प्रकारान्तर से महात्मा गांधी की उस बहु प्रचारित उक्ति को ही कटघरे में खड़ा करते हैं जिसमें कतार के आखिरी आदमी तक की सुविधा की बात कही गई है।

त्रिलोचन की ये कहानियां ताप के उन्हीं ताए दिनों और उस जनपद को ठीक से समझने के लिए याद की जाएंगी, त्रिलोचन की कविता में जिनकी एक विशिष्ट भूमिका है। ■